श्रीः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

श्रीमान् वेङ्कटनाथार्यः कवितार्किककेसरी।
वेदान्ताचार्यवर्यो मे सन्निधत्तां सदा हृदि॥

॥ श्रीसुदर्शनाष्टकम् ॥

This document has been prepared by*

Sunder Kidambi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness *śrīmad āṇḍavan* of *śrīraṅgam*

*This was typeset using LaTeX and the **skt** font.

श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

॥ श्रीसुदर्शनाष्टकम् ॥

श्रीमान् वेङ्कटनाथार्यः कवितार्किककेसरी।
वेदान्ताचार्यवर्यो मे सन्निधत्तां सदा हृदि॥

प्रतिभट श्रेणि भीषण
वर गुण स्तोम भूषण
जनि भय स्थान तारण
जगदवस्थान कारण।
निखिल दुष्कर्म कर्शन
निगम सद्धर्म दर्शन
जय जय श्रीसुदर्शन
जय जय श्रीसुदर्शन॥ १ ॥

शुभ जगद्रूप मण्डन
सुर गण त्रास खण्डन
शतमख ब्रह्म वन्दित
शतपथ ब्रह्म नन्दित।
प्रथित विद्वत्सपक्षित
भजदहिर्बुध्न्य लक्षित
जय जय श्रीसुदर्शन
जय जय श्रीसुदर्शन॥ २ ॥

स्फुट तटिज्जाल पिञ्जर
पृथुतर ज्वाल पञ्जर
परिगत प्रत्न विग्रह
पटुतर प्रज्ञ दुर्ग्रह।
प्रहरण ग्राम मण्डित
परिजन त्राण पण्डित
जय जय श्रीसुदर्शन
जय जय श्रीसुदर्शन॥ ३ ॥

निज पद प्रीत सद्गण
निरुपधि स्फीत षड्गुण
निगम निर्व्यूढ वैभव
निज पर व्यूह वैभव।
हरि हय द्वेषि दारण
हर पुर प्लोष कारण
जय जय श्रीसुदर्शन
जय जय श्रीसुदर्शन॥ ४ ॥

दनुज विस्तार कर्तन जनि तमिस्रा विकर्तन
दनुज विद्या निकर्तन भजदविद्या निवर्तन।
अमर दृष्ट स्व विक्रम समर जुष्ट भ्रमि क्रम
जय जय श्रीसुदर्शन जय जय श्रीसुदर्शन॥ ५॥

प्रतिमुखालीढ बन्धुर पृथु महा हेति दन्तुर
विकट माया बहिष्कृत विविध माला परिष्कृत।
स्थिर महायन्त्र तन्त्रित दृढ दया तन्त्र यन्त्रित
जय जय श्रीसुदर्शन जय जय श्रीसुदर्शन॥ ६॥

महित संपत्सदक्षर विहित संपत्षडक्षर
षडर चक्र प्रतिष्ठित सकल तत्त्व प्रतिष्ठित।
विविध सङ्कल्प कल्पक विबुध सङ्कल्प कल्पक
जय जय श्रीसुदर्शन जय जय श्रीसुदर्शन॥ ७॥

भुवन नेत्र त्रयीमय सवन तेजस्त्रयीमय
निरवधि स्वादु चिन्मय निखिल शक्ते जगन्मय।
अमित विश्व क्रियामय शमित विष्वग्भयामय
जय जय श्रीसुदर्शन जय जय श्रीसुदर्शन॥ ८॥

द्विचतुष्कमिदं प्रभूत सारं पठतां वेङ्कटनायक प्रणीतम्।
विषमेऽपि मनोरथः प्रधावन् न विहन्येत रथाङ्ग धुर्य गुप्तः॥ ९॥

॥ इति श्रीसुदर्शनाष्टकं समाप्तम्॥

कवितार्किकसिंहाय कल्याणगुणशालिने।
श्रीमते वेङ्कटेशाय वेदान्तगुरवे नमः॥